मोरंगे

जुलाई–अगस्त 2018

इस बार

खिड़की

3 समझदार ऊँट

कविताएँ

5 पानी आया

6 स्टॉल / मेरी इच्छा

7 छोटा बच्चा / उल्लू

8 गर्मी को दोपहरी

कहानियाँ

9 अच्छे दिन

12 चमकीला पत्थर

13 जानवर जैसा

14 जान बची

15 भालू की मदद

याद की धूप–छाँव में

16 डर गया

17 ईनाम

18 दवाई / प्लास्टर

बात लै चीत लै

19 चालाक नौकर

कमल कुमार सैनी
शिक्षक, जगनपुरा विद्यालय

20 मटरगश्ती बड़ी सस्ती

21 हीहीही–ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जगदीश प्रसाद सैनी
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – प्रिया, उम्र–7 वर्ष, समूह–रिमझिम
वर्ष 9 अंक 97–98

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

खिड़की

समझदार ऊँट

एक अरबी तपते हुए रेगिस्तान में यात्रा कर रहा था। साथ में उसका ऊँट और ऊँट पर लदा था ढेर सारा सामान। ऊँट और अरबी दोनों ही पसीने से तर–बतर थे। गर्मी से थक कर अरबी ने फैसला किया कि अब वह कहीं आराम करेगा। इसलिए यात्रा बीच में ही रूक गई। ऊँट की पीठ से अपना तंबू उतारकर अरबी ने एक जगह गाड़ दिया और उसके अंदर जाकर सुस्ताने लगा।

रौनक, उम्र–8 वर्ष, समूह–संगम

ऊँट भी छाँया चाहता था मगर अरबी ने डपटकर उसे धूप में ही खड़े रहने का हुक्म दिया। अरबी ने तंबू में दो तीन घंटे तक आराम किया। जब सूरज थोड़ा सा ढल गया और उमस कम हो गई, तब अरबी ने भोजन किया और ऊँट पर सवार होकर यात्रा के लिए चल पड़ा। ऊँट बेचारा मन मसोसकर रह गया। उसे अपने निर्दयी मालिक पर बहुत गुस्सा आ रहा था।

चलते–चलते रात हो गई। मौसम ठण्डा होने लगा था। रेगिस्तान में दिन जितने गरम होते हैं, राते उतनी ही ठण्डी होती हैं। आधी रात होते होते अरबी के दांत ठंड से किटकिटाने लगे तो उसने फिर ऊँट को रोका और उसकी पीठ से तंबू उतारकर रेत में ही लगाया तथा उसके अंदर घुसकर आराम करने का विचार किया।

इस बार ऊँट पहले से ही तैयार था। उसने कहा, ''मालिक, मुझे भी ठंड लग रही है।''

''तो....?'' अरबी ने घूरकर उसकी ओर देखा और टेंट में घुस गया ऊँट बार बार

तंबू में सिर घुसाकर पूछता, ''मालिक मैं भी अंदर आ जाऊं.... ?''

मालिक ने सोचा कि ऐसे तो यह बेहुदा ऊँट मुझे सोने ही नहीं देगा। इसलिए उसने कहा, ''ठीक है, तुम भी अपना सिर तंबू के अंदर कर लो।'' ऊंट खुष हो गया। वह मन ही मन मुस्कुरा रहा था।

कुछ ही समय गुजरा था कि ऊँट ने फिर कहा, ''वाह मालिक, मजा आ गया। अब मेरे सिर को ठंड नहीं लग रही है। आप बुरा न मानें तो अपनी अगली टांगें भी तंबू के अंदर कर लूं।''

लक्ष्मी सैनी, उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू

अरबी ने सोचा इसमें बुराई क्या है? उसने अपने पैर सिकोड़ लिए और ऊँट ने गरदन और अगली टांगें भी टेंट में कर ली।

अरबी की आंखें झपकी ही थी कि ऊँट जोर से कहराने लगा। अरबी ने पूछा, ''अब क्या हुआ?''

ऊँट बोला, ''ऐसे तो मैं बीमार हो जाऊंगा मालिक! आधा षरीर गरम और आधा ठंडा हो रहा है। देख लीजिए, अगर मैं बीमार हो गया तो आपको भी यात्रा बीच में ही छोड़नी पड़ेगी।''

अरबी बेचारा सोच में पड़ गया। फिर बोला, ''तो क्या करूं?''

''करें क्या मालिक? मैं अपना बाकी षरीर भी अंदर कर लेता हूँ।'' ऊँट बोला।

''नहीं, नहीं! इस तंबू में दो की जगह नहीं है।''

''हाँ, यह बात तो है मालिक।'' ऊँट बोला, ''ऐसा कीजिए, आप बाहर निकल जाइए। मैं अंदर लेट जाता हूं।'' यह कहकर ऊँट तंबू में घुस गया और अरबी को सारी रात रेगिस्तान की ठंड में गुजारनी पड़ी।

आमिर – हिन्दी वार्ता से साभार

पानी आया

आसमान से पानी आया।
झम झम झम झम पानी आया।
देखो जोर से पानी आया।
मोटे मोटे टपके लाया।
झोपड़ियों को ढसाते आया।
बच्चों को नहलाते आया।
नदियों को बहाते आया।
मेंढक को टर्राते आया।
आसमान से पानी आया।
झम झम झम झम पानी आया।

शिवराज गुर्जर, समूह–सागर,
उदय पाठशाला गिरिराजपुरा।

शोभा गुर्जर, उम्र–8 वर्ष, समूह–संगम

नीलू, उम्र–5 वर्ष, समूह–संगम

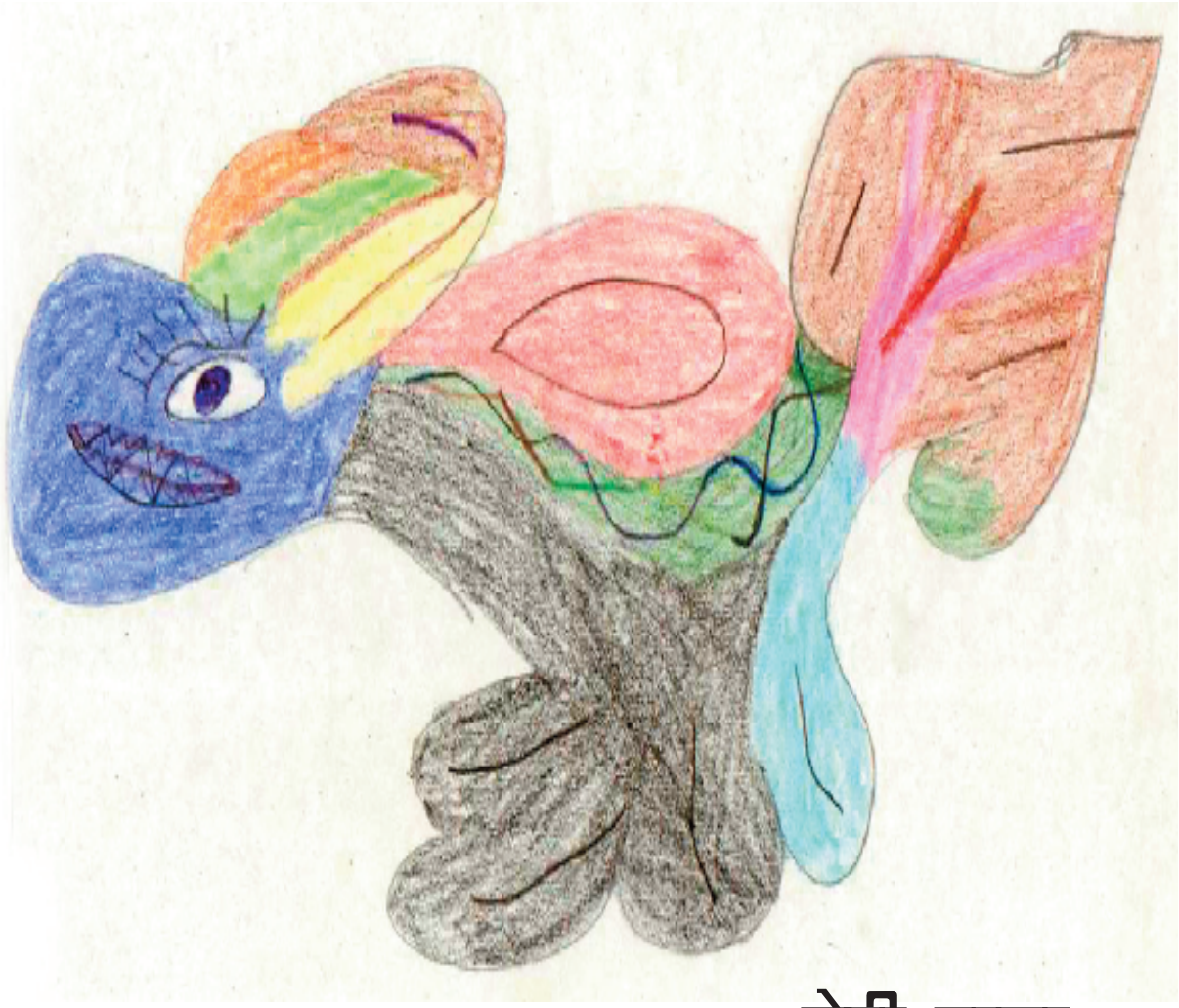

अमर सिंह, उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू

मेरी इच्छा

मेरी इच्छा है साईकिल चलाऊँ।
मम्मी–पापा को उस पर बैठाऊँ।
छोटे भैया को सैर कराऊँ।
रोज साइकिल से स्कूल जाऊँ।
सब बच्चों को खूब चिढ़ाऊँ।
साइकिल पर ही खाना खाऊँ।
रोज उठकर दौड़ लगाऊँ।
अपनी साइकिल सबको दिखाऊँ।
बैठ–बैठ कर मैं इतराऊँ।

रजनी प्रजापत
समूह–मुस्कान, राजकीय
विद्यालय बोदल

स्टॉल

सबके गले में रहता हूँ।
लड़कियाँ मुझे ओढ़ती है।
मैं धूप से बचाता हूँ।
पसीने को पौछता हूँ।
सिर की रक्षा करता हूँ।

दीपा
उम्र–7 वर्ष, समूह–सागर

दीपिका मीना, उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

छोटा बच्चा

डफली बजा रहा,
छोटा बच्चा रेल में।
नाच दिखाकर लुभा रहा,
छोटा बच्चा रेल में।
झाड़ू लगा रहा,
छोटा बच्चा रेल में।
गाना गा रहा,
छोटा बच्चा रेल में।
सबसे पैसे मांग रहा,
छोटा बच्चा रेल में।

उल्लू

उल्लू निकले रात में,
उल्लू की बारात में।
हँसते गाते उल्लू आए,
उल्लू की बारात में।
और जानवर कैसे आते,
दिखता भी क्या रात में।

नील,
समूह–खेजड़ी, उम्र–10 वर्ष

मुकेश मीना, उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

गर्मी की दोपहरी

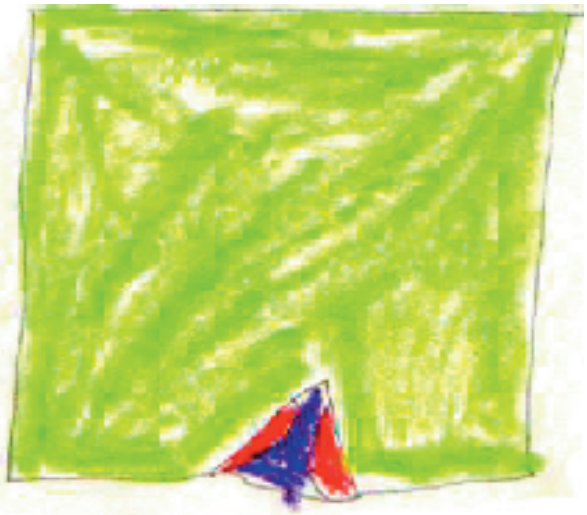

आसमान से बरसे आग।
धरती से उड़ती है खाक।
गरम–गरम लू चलती है।
दोपहरी बहुत तपाती है।
दिन में सो जाती है बस्ती।
रात में करते बच्चे मस्ती।
चीजें भी मिलती हैं सस्ती।

रजनी प्रजापत,
समूह–मुस्कान, राजकीय विद्यालय बोदल

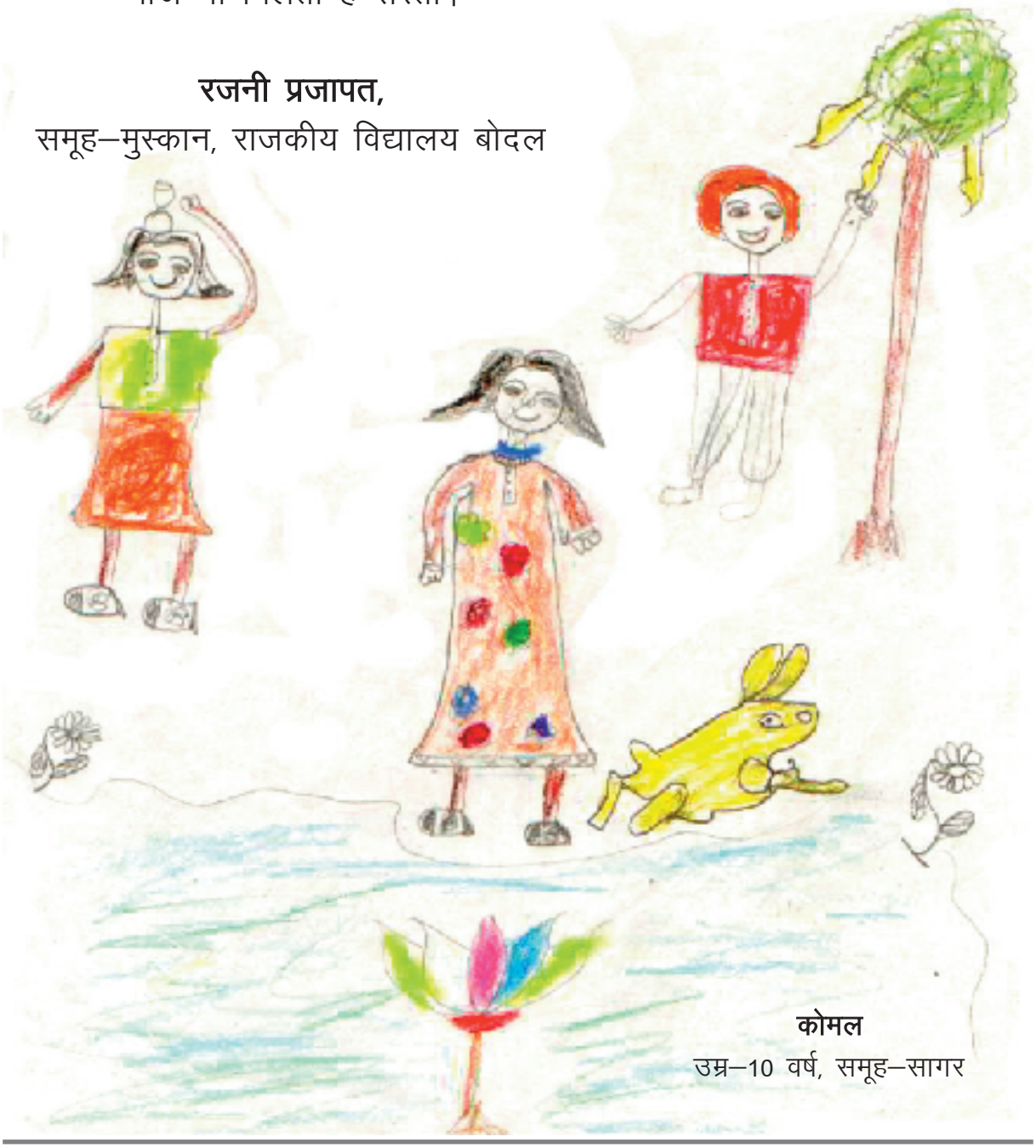

कोमल
उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

कहानी

अच्छे दिन

हरिया की जमीन में एक भी पेड़ नहीं था। बेचारा दिन भर खेतों में काम करता और अपनी धोती का तम्बू बनाकर उसकी छांव में ही दोपहरी काटता। ऐसा नहीं है कि उसने पेड़ लगाने की कोशिश नहीं की पर कोई पौधा पनपा ही नहीं। हरिया भी हिम्मत हार चुका था। एक दिन हरिया को एक पौधा खेत की मेड़ में नजर आया।

दीना, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय, छरोदा

हरिया ने उसे अनदेखा कर दिया। उसने सोचा यह पौधा भी दूसरे पौधों की तरह जल्द ही सूख जायेगा। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। पौधा तेजी से बड़ा होने लगा। किसी जानवर या इन्सान ने भी उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। आस–पास के नये पौधे सूख चुके थे। पर यह तो एक दम हरा–भरा था। अब तो हरिया भी आते–जाते उसे देखता। हरिया को लगा जैसे यह पौधा एक बड़ा पेड़ बन सकता है। यही बात सोचकर हरिया ने उसकी सुरक्षा के लिए चारों तरफ कांटेदार बाड़ लगा दी। आते–जाते अपने घड़े से थोड़ा पानी पौधे में भी डाल देता। धीरे–धीरे पौधा बड़ा हो रहा था। इधर हरिया अपनी रोटियाँ उस पर बांधने लगा ताकी कोई कुत्ता, बिल्ली रोटियों को न खा सके। रोटियों की वजह से एक गिलहरी वहाँ आने लगी। अब तो चिड़िया, कौवा, कबूतरों ने उसे अपना घर ही बना लिया था। पेड़ की छावँ बढ़ती जा रही थी। हरिया दोपहरी में उसी छांव के नीचे बैठकर खाना खाता और आराम करता। थोड़े दिनों बाद छांव इतनी बड़ी हो गई कि हरिया के बैल भी उस छांव में आराम से बैठने लगे। समय बीतते–बीतते पेड़ घने वृक्ष में बदल गया। छोटे–बड़े पक्षियों ने पेड़ को अपना घर बना लिया। आते जाते लोग वहाँ रूकते और आराम करते। गाय–भैंसों के ग्वाल वहाँ खेलते। लोगों की चहल पहल के कारण उस जगह

को लोग ''हरिया का पेड़'' कहकर बुलाते। वह पेड़ लोगों के मिलने की जगह बन गया। हरिया ने भी अपना गाँव वाला घर छोड़कर उस पेड़ के नीचे बसेरा बना लिया। वह बहुत खुष था। उसे जब भी समय मिलता पेड़ के नीचे चारपाई बिछाकर आराम करता। आने–जाने वालों के लिए भी उसने कुछ चारपाईयाँ बनवाकर बिछा दी।

एक दिन लकड़ियों का एक व्यापारी आया और पेड़ को देखकर बोला, ''भाई हरिया यह पेड़ तो बहुत बड़ा है। इसकी लकड़ियां भी बहुत मजबूत हैं। इसे मुझे बेच दो।''

''नहीं भाई, यह पेड़ बिकाऊ नहीं है। बड़े जतन और इन्तजार के बाद यह पेड़ बना है। मैं इसे नहीं दे सकता। '' हरिया ने जवाब दिया।

व्यापारी फिर बोला, ''देखो हरिया, ''मैं तुम्हें इसके इतने पैसे दूँगा कि तुम्हारी सारी गरीबी दूर हो जायेगी।''

हरिया ने सिर का रूमाल खोला और अपने मुहँ का पसीना पोंछते हुए कहा, ''देखो भाई, इस पेड़ के कारण मेरी बड़ी इज्जत है। चार आदमी मेरे यहाँ आकर बैठते हैं, मेरे बैल यहाँ आराम करते हैं, कितने ही पक्षियों का घर इस पेड़ पर है। बूढ़ी गिलहरी का तो पूरा वंष ही यहाँ बसा हुआ है। मैं इस बसी बसाई जगह को नहीं उजाड़ सकता।''

व्यापारी ने चारपाई से उठते हुए कहा, '' देखना एक दिन यह पेड़ बिना दाम दिए ही मिट जायेगा और तुम देखते रह जाओगे।''

हरिया ने पेड़ पर लगे दीवड़े में पानी डालते हुए कहा, '' अब पैसों की जरूरत नहीं मुझे, ये पेड़ और इससे बसी दुनिया ही मेरा सब कुछ है।''

इसी तरह हंसी खुशी दिन बीतते रहे। एक दिन जोर का तूफान आया जिसमें लोगों के घरों के कोल्हू उड़ गये, बिजली के तार टूट गये। एक जोर के झोंके में हरिया का पेड़ भी गिर गया। पेड़ को गिरता देख सभी जानवर, पक्षी दूर चले गये। पर हरिया वहीं खड़ा सब देखता रहा। जब तूफान रूका तो लोग अपने–अपने घरों से निकले और आस–पास हुए नुकसान की खबर लेने लगे। हरिया ने भी अपने पेड़ का अवलोकन किया। पेड़ के साथ पक्षियों के घोंसले, उनमें रखे अंडे, पानी पीने का दीवड़ा सब टूटा पड़ा था। तभी हरिया को अपने बैलों की याद आई। बैलों को वहां नहीं पाकर हरिया बड़ा दुखी हुआ। बेचारे हरिया की तो पूरी दुनिया ही उजड़ गयी। इस प्राकृतिक आपदा के लिए किसे दोष दें? जब गांव के लोगों को पेड़ टूटने का पता चला तो वे वहाँ पहुंचे। सब एक ही बात कर रहे थे कि अब हम कहाँ बैठेंगें और कहाँ एकठ्ठे होंगे? गाँव के ग्वाल और पशु पक्षियों का तो बसेरा ही उजड़ गया। हर कोई अपने अपने हिसाब से पेड़ टूटने का दुःख जता रहा था।

बात आई–गई हो गयी, आते–जाते जानवरों ने पेड़ के पत्तों को खा लिया और पेड़ की लकड़ियों को लोग काट कर अपने घर ले गये। हरिया ने अपने बैलों को आस–पास बहुत खोजा, पर उनका कहीं पता नहीं लगा। वह दिन भर बैठा अपने बैलों के बारे में ही सोचता, ''बेचारे तूफान से बिदक कर कहाँ निकल गये? कुछ खाने–पीने को भी मिला होगा कि नहीं।'' घर में बैल नहीं थे पर फिर भी वह उनके इन्तजार में बैठने की जगह साफ करता और खाने के लिए नाद में चारा डालता। एक दिन जब हरिया घर के बाहर सो रहा था तो घंटियों की टन...,टन... सुनकर उसकी आंख खुल गई। हरिया ने देखा उसके दोनों बैल नाद में सर झुकाए चर रहे हैं और बींच–बींच में गर्दन घुमाकर हरिया की तरफ भी देखते जाते हैं। हरिया तुरंत उठा और बैलों के गले से लिपट गया।

विक्रम, उम्र–6 वर्ष, समूह–फुलवारी

हरिया अपने बैलों के साथ फिर से काम में जुट गया। जब भी दोपहर होती तो उन्हे अपने पेड़ की याद आती। बरसात षुरू हो चुकी थी। हमेशा की तरह आस–पास घास उग आई थी। हरिया ने देखा पुराने पेड़ की जगह बहुत सारे पेड़ उग आए हैं। ये सारे पेड़ उसी पुराने पेड़ से फूटे थें। हरिया यह तो जानता ही था की इस पेड़ के पौधे सूखने या मरने वाले तो हैं ही नहीं। इसलिए उसने इस बार उन सब पेड़ों को निकाल कर खेत के अलग–अलग हिस्से में लगा दिया। अब हरिया बैलों के साथ–साथ उन पेड़ों की भी देखभाल करता। कुछ महिनों बाद हरिया का घर पहले से भी ज्यादा हरा–भरा लगने लगा। हरिया के अच्छे दिन फिर लौट आये।

विष्णु गोपाल

चमकीला पत्थर

शीला बाई, गाँव–पाड़ली

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक बहुत गरीब आदमी रहता था। उस गाँव के लोग ऊँच–नीच का भेद करते थे। वह आदमी गरीब था इसलिए कोई उसे अपने घर के बाहर चबूतरे पर भी नहीं बैठने देता था। एक बार उस आदमी ने सोचा अगर मैं कुछ कमाऊँगा तो मैं भी अमीर हो जाऊँगा। उस आदमी ने कमाने का पक्का निर्णय कर लिया। वह आदमी घर से रवाना हुआ। रास्ते में उसे प्यास लगी। उसने पानी का एक तालाब देखा। उसने तालाब से पानी पिया और आगे चल दिया। आगे चलने पर उसे एक आदमी दिखाई दिया। वह उस आदमी से कहता है, ''अरे भाई मुझे कोई काम या नौकरी मिल सकती है?'' वह आदमी उसे मछुआरे की नौकरी दे देता है। आदमी जब मछलियाँ पकड़ने जाता है तो उसके जाल में एक चमकीला पत्थर फँस जाता है। आदमी उस पत्थर को ले जाकर एक ईमानदार आदमी को दिखाता है और पूछता है, ''अरे भाई यह क्या है?'' वह आदमी कहता है यह तो हीरा है। मछुआरा यह सुनकर बहुत खुश हो जाता है। वह उस पत्थर को लेकर अपने गाँव में वापस पहुँच जाता है और उस पत्थर को बेचकर गाँव का बड़ा आदमी बन जाता है। वह गरीबों की मदद करता है। जिससे उसके गाँव में एक भी गरीब नहीं रहता। वह सब लोगों से कहता है कि हमें ऊँच–नीच का भेद नहीं करना चाहिए। जरूरत पड़ने पर हमें एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। इसके बाद उस गाँव के लोग खुशी–खुशी मिलकर रहने लगते हैं।

काजल महावर, उम्र–11 वर्ष, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय आवासन मण्डल

जानवर जैसा

दीपक मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू

एक बार एक पहाड़ पर बहुत ही सुन्दर पौधा उगा हुआ था। वहाँ से एक आदमी गुजरा तो उसकी नजर उस पौधे पर पड़ी। उसने सोचा, कि यह पौधा कितना सुन्दर है। क्यों न, मैं इसे उखाड़कर ले जाऊँ और अपने घर पर लगा दूँ। गाँव वाले मेरे घर पर इस पौधे को देखेंगे तो बहुत खुश होंगे। यह पौधा जानवर की तरह लगता है। जैसे ही वह आदमी उस पौधे को उखाड़ने लगा तो वहाँ एक औरत आ गई।

औरत ने कहा, ''तुम यह पौधा क्यों उखाड़ रहे हो?''

आदमी ने कहा, ''तुम्हें, इससे क्या लेना–देना है।''

वे दोनों आपस में झगड़ने लगे। उनका झगड़ा बढ़ता ही गया। कुछ देर में इधर से औरत के गाँव वाले आ गये और उधर से आदमी के गाँव वाले आ गये। उन गाँव वालों ने मिलकर उन्हें झगड़ने से रोका और झगड़े का कारण जाना।

महिला ने बताया कि, ''यह व्यक्ति जंगल से इस पौधे को उखाड़कर ले जा रहा था, मैंनें इसे रोकने की कोशिश की तो झगड़ने लगा।''

गाँव वालों ने जब उस पौधे को देखा तो वे आश्चर्य चकित रह गये। वह बहुत ही सुन्दर पौधा था और एकदम जानवर जैसी आकृति का दिखाई दे रहा था। गाँव वालों ने मिलकर निर्णय किया कि यह पौधा जिस जगह पर उगा है वहीं रहेगा। कोई भी व्यक्ति इसे नहीं ले जा सकता, जो व्यक्ति इसे यहाँ से उखाड़कर ले जायेगा, उसे दण्ड दिया जायेगा। फिर वह आदमी कुछ नहीं बोला और वहाँ से चल दिया।

मनकेश गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

एक बार एक हाथी और बंदर दोनों दोस्त थे। वे दोनों एक जंगल में रहते थे। उन्हें एक जामुन का पेड़ दिखाई दिया जिस पर बहुत सारे जामुन आ रहे थे। दोनों जामुन खाने चले गये। उन्होंने भर पेट जामुन खाये। जामुन खाने के बाद बंदर को प्यास लगी तो उसने हाथी से कहा, ''मुझे तो जोर से प्यास लगी है, चलो पास ही एक छोटा सा तालाब है, वहाँ जाकर पानी पीते हैं।'' वे दोनों पानी पीने के लिए

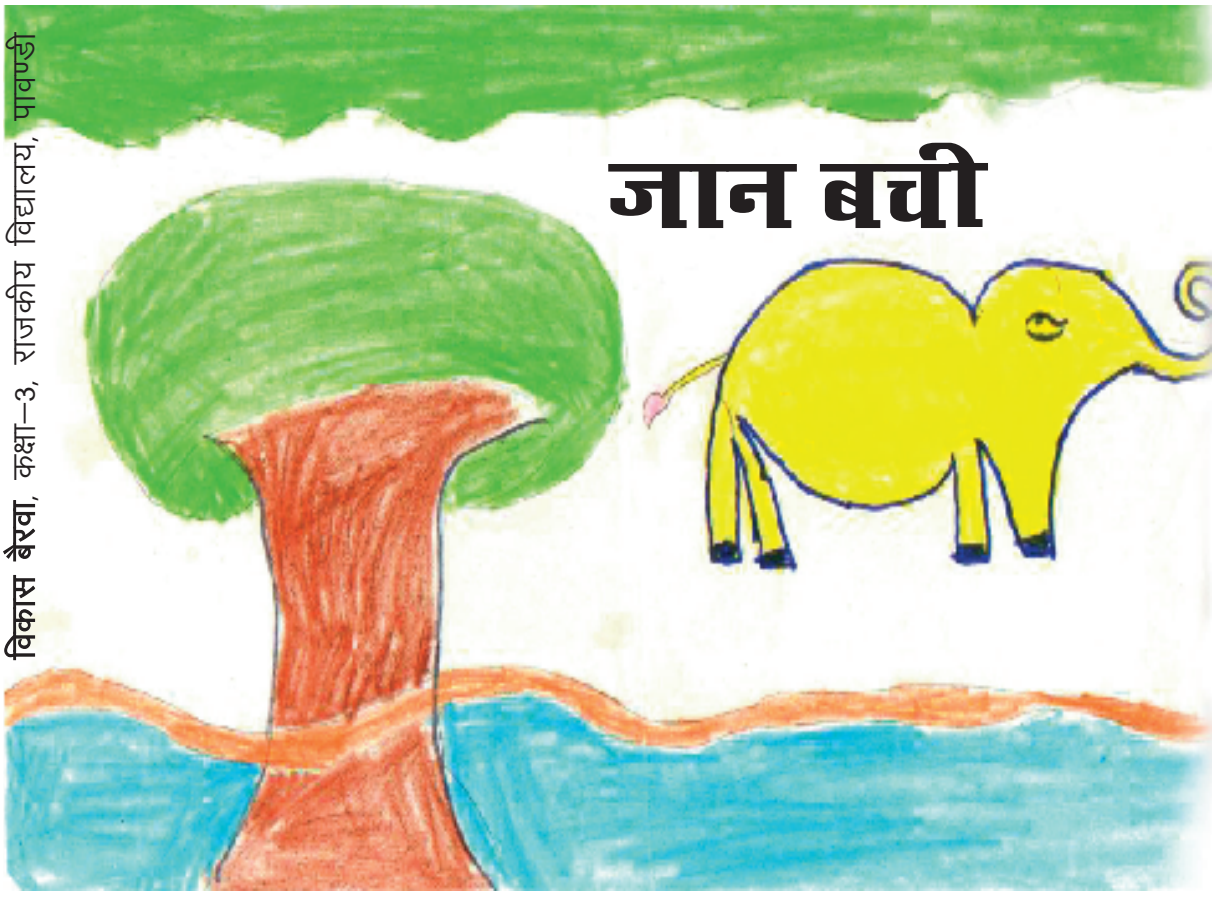

विकास बैरवा, कक्षा–3, राजकीय विद्यालय, पावण्डी

तालाब पर गये। तालाब में एक मगरमच्छ था। बंदर जैसे ही पानी पीने लगा तो उसे मगरमच्छ ने पकड़ लिया और उसे पानी में ले जाने लगा। हाथी अपने दोस्त को इस तरह फँसा देखकर परेशान होने लगा। उसके दिमाग में एक विचार आया कि क्यों ना मैं अपनी सूंड से तालाब के सारे पानी को बाहर निकाल दूँ। हाथी अपनी सूंड से पानी को निकालने लगा। कुछ ही देर में तालाब का सारा पानी बाहर निकाल दिया तो हाथी को मगरमच्छ दिखाई दिया। उसने अभी भी बंदर को पकड़ रखा था तथा खाया नहीं था, बंदर जिंदा था। हाथी ने मगरमच्छ के जोर की लात मारी। जिससे मगरमच्छ के मुँह से बंदर निकल गया और भाग गया। बंदर ने हाथी को बहुत धन्यवाद दिया और कहा, ''यदि आज तुम नहीं होते तो मेरी जान नहीं बच सकती थी।''

महेन्द्र गुर्जर, कक्षा–3, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

भालू की मदद

कृष्णा मीना, उम्र–8 वर्ष, समूह–खुशबू

एक भालू था। वह एक पहाड़ पर रहता था। वहाँ पर बहुत सारे पेड़ थे तथा उन पेड़ों पर बहुत सारे बंदर रहते थे। वे बंदर भालू के साथी थे परन्तु कभी–कभी भालू को परेशान करते रहते थे। एक दिन भालू एक गाड़ी में आलुओं को भरकर बेचने जा रहा था।

बंदरों ने पूंछा, ''भालू कहाँ जा रहे हो?

भालू ने कहा, ''आलू बेचने।''

इस पर बंदरों को खूब हंसी आई। बंदरों ने कहा, ''आलू जैसा तो तुम्हारा ही नाम है, भालू।''

बंदरों ने फिर कहा, ''आलू बेचने कहाँ जाओगे?''

भालू ने कहा, ''आलनपुर मण्डी जाऊँगा।'' भालू वहाँ से चल दिया। जब वह कुछ ही दूर गया तो उसकी गाड़ी पिंचर हो गई।

भालू ने गाड़ी वाले से पूछा कि, ''गाड़ी आगे क्यों नहीं चल रही है?''

गाड़ी वाले ने कहा, ''गाड़ी पिंचर हो गई है।''

वहाँ आस–पास कोई पिंचर निकालने वाला नहीं था। भालू गाड़ी का टायर खोलकर पिंचर निकलवाकर लाया। फिर वे कुछ ही दूरी पर चले थे कि उनकी गाड़ी को दूसरी गाड़ी ने टक्टर मार दी। उनके सारे आलू नीचे बिखर गये। भालू के आलू बकरियाँ खाने लग गई। तभी एक पक्षी ने यह खबर बंदरों तक पहुँचा दी। बंदर दौड़े–दौड़े भालू की मदद के लिए आ गए। उन्होंनें मिलकर आलुओं को बीना और गाड़ी में भरवाकर भालू को आलू बेचने के लिए रवाना किया। जब भालू आलू बेचकर वापस चला तो बंदरों के लिए केले खरीदकर ले गया। भालू ने बंदरों को केले दिये और मदद के लिये बहुत धन्यवाद दिया। बंदरों ने भी केलों के लिए भालू को धन्यवाद दिया।

पवन गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

नीता महावर, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय, राँवल

डर गया

एक बार मैं साईकिल से खेत पर गया। खेत बहुत दूर था। शाम का समय था। मेरे वहाँ पहुँचते ही साईकिल खराब हो गई। मैं उसे सही करने लगा। तभी अंधेरा हो गया। मैं बहुत डरा हुआ था। मैं वहीं सो गया। पर मुझे डर लग रहा था। तभी एक कुत्ता आया और मेरे कान में चिल्लाकर भाग गया। मैं उसके पीछे भागा। मैं रास्ता भटक गया। फिर न जाने कैसे मैं वापस खेत पर आया। मैनें देखा तो साईकिल वहाँ नहीं थी। मैं और जोर से डर गया। डर से मेरे साथ अजीब–अजीब चीजें होने लगी। मैं बैठा तो हवा में उड़ने लगा। मैं उठा तो गिरने लगा। तभी मुझे एक आदमी दिखाई दिया। मैं भागकर उसके पास गया। वह बोला, ''तुम कौन हो?''

मैं बोला, ''मैं हमारे खेत पर आया था, लेकिन साईकिल खराब हो गई। मैं उसे ठीक करने लगा तो रात हो गई तब मुझे आप मिले। कृपया मेरी मदद करो। मुझे मेरे घर तक पहुँचा दो।'' मैंने जैसे उसकी तरफ देखा तो उस आदमी के सिर नहीं था। मैं यह देखकर इतना डर गया कि मैं वहीं बेहोश हो गया। जब मैं उठा तो मैं घर पर सो रहा था। मैं घबरा गया।

मैंने पापा से पूछा, ''मैं यहाँ कैसे आया?''

उन्होंने बताया, ''तुम खेत पर बेहोश थे। हमने तुम्हें हर जगह ढूँढा पर तुम हमें खेत पर बेहोश मिले।''

मैंने पूछा, ''मेरी साईकिल कहाँ है?''

मम्मी ने कहा, ''तुम साईकिल के पास ही तो मिले थे।''

सोनू, उम्र–10 वर्ष, समूह–तिरंगा

लवकुश
कक्षा–5, रा.उ.प्रा.वि. इटावदा

ईनाम

मेरे फूफाजी की माता को बुखार आता था। मैं उनकी मेडिकल पर जाँच करवा रहा था। वहाँ पर एक बूढ़ी औरत दवा खरीद रही थी तो उसका पर्स नीचे गिर गया। मुझे उसका पर्स गिरने का पता चल गया। मैं जैसे ही पर्स उठाने के लिए गया तो एक आदमी ने वह पर्स उठा लिया और लेकर जाने लगा। मैंने उस बूढ़ी औरत से कहा, ''अम्मा जी आपका पर्स गिर गया था, वह आदमी उठाकर लेकर जा रहा है।'' उस मेडिकल वाले ने उस आदमी को रोका और उससे कहा, ''इस बुढ़िया का पर्स वापस लौटा दे।'' उस आदमी ने बुढ़िया का पर्स लौटा दिया। उस बूढ़ी औरत ने मुझसे कहा, ''बेटे तुमने मेरे छः–सात हजार रूपये बचा लिए। यह लो, दस रूपये इनाम के ले लो।'' मैंने उससे मना किया, पर वह नहीं मानी और मुझे दस रूपये दे दिये।

बुद्धि प्रकाश गुर्जर, उम्र–12 वर्ष, समूह–सागर

अंकिता मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–रौशनी

दवाई

एक बार हमें उज्ज्वल जी सर खिला रहे थे। खेलते समय मैं दौड़ रहा था। मैंने अरूण जी सर की चप्पल पहन रखी थी। चप्पलें बड़ी होने के कारण मेरा पैर फिसल गया और मैं गिर गया। मेरे अंगूठे में चोट लग गई। शैलेन्द्र जी सर ने दवाई लगाई, तब जाकर तीन–चार दिनों में ठीक हो पाया।

मनकुश गुर्जर, समूह–सागर, उम्र–10 वर्ष

गोलमा,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–झरना

प्लास्टर

एक बार हमने सरसो निकलवाई थी। तब ट्रेक्टर हमारे खेत में ही खड़ा हुआ था। मैं खेत में गई और ट्रेक्टर के ऊपर चढ़ कर खेलने लगी। खेलते समय अचानक मेरा पैर फिसल गया और मैं नीचे गिर गई। गिरने के कारण मेरा हाथ टूट गया। मैं रोते हुए घर आई। मेरे पिताजी ने पूछा, ''क्या हुआ?''

मैंने कहा, ''हाथ मे लग गई।'' फिर मेरे पिताजी मुझे सवाई माधोपुर ले गये और डॉक्टर को दिखाया।

डॉक्टर ने कहा, ''तेरा तो हाथ टूट गया है।'' फिर मेरे हाथ में प्लास्टर बांध दिया। मेरे पिताजी मुझे घर ले आए।

शारदा, समूह–सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

बात लै चीत लै

चालाक नौकर

मनीषा सैनी, उम्र–10 वर्ष, समूह–रोशनी

एक गाँव में एक जमींदार रहता था। उसके लिए कुछ किसान अल्पाहार में एक भुना हुआ मुर्गा और एक बोतल फल का रस लेकर आये। जमींदार ने अपने नौकर को बुलाकर चीजें अपने घर ले जाने के लिए कहा। नौकर बहुत चालाक था, यह बात जमींदार जानता था।

उसने नौकर से कहा, ''बोतल में जहर है और कपड़े के अंदर चिड़िया है। खबरदार जो रास्ते में उस कपड़े को हटाया। क्योंकि अगर तुमने ऐसा किया तो चिड़िया उड़ जाएगी और तुमने बोतल सूंघ भी ली तो तुम मर जाओ, समझे?''

नौकर भी अपने मालिक को खूब पहचानता था। उसने एक आरामदेह कोना ढूंढा और बैठकर भुना हुआ मुर्गा खा गया। उसने बोतल में जो रस था वह भी सारा पी लिया। एक बूंद भी नहीं छोड़ी। उधर जमींदार भोजन के समय घर पहुँचा और पत्नी से भोजन परोसने के लिए कहा।

उसकी पत्नी ने कहा, ''जरा देर ठहरो, खाना अभी तैयार नहीं है।''

जमींदार ने कहा, ''मैंने जो मुर्गा और रस की बोतल नौकर के हाथ भेजी थी, वह दे दो, वही काफी है।''

उसकी पत्नी ने कहा, ''नौकर तो सुबह का आपके साथ गया उसके बाद लौटा ही नहीं है।

बिना कुछ बोले गुस्से से भरा जमींदार अपने काम की जगह वापस गया तो देखा नौकर तान कर सो रहा है। उसने उसे लात मारकर जगाया और किसान द्वारा लाई गई भेंट के बारे में पूछा।

नौकर बोला, ''मालिक मैं घर जा रहा था, अचानक बहुत जोर की हवा चली तो चिड़िया के ऊपर ढका हुआ कपड़ा उड़ गया। जैसे आपने कहा था, चिड़िया उड़ गई। मुझको बहुत डर लगा कि आप मुझे सजा देंगे। मैंने सोचा इससे तो मर जाना ही अच्छा है। यह सोचकर मैंने बोतल का सारा जहर पी लिया। अब यहाँ लेटा–लेटा मौत के आने का इंतजार कर रहा हूँ।

शैलेन्द्र सिंह राजावत, शिक्षक, उदय पाठशाला गिरिराजपुरा

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

1. चार खड़े, दो आडे, दो पड़े।
एक–एक के मुहँ में दो–दो
पड़े।
2. उछले दौड़े, कूदे दिनभर,
यह दिखने में बड़ा ही सुंदर,
लेकन नहीं ये भालू, बंदर।
अपनी धुन में मस्त कलंदर,
इसके नाम में जुड़ा है रन।
घर है इसके सुंदर वन।
3. मैं हूँ हरी मेरे बच्चे काले।
मुझे छोड़, मेरे बच्चे खाले।
4. नहीं मैं मिलती बाग में,
आधी फल हूँ आधी फूल।
काली हूँ पर मीठी हूँ,
खा के न पाया कोई भूल।
5. परिवार हरा हम भी हरे,
एक थैली में तीन–चार भरे,
बताओ मैं कौन हूँ।
6. भूरा बदन, रेखाएँ तीन,
दाना खाती हाथ से बीन,
बताओ क्या।
7. ऐसा एक अजब खजाना,
जिसका मालिक बड़ा सयाना,
दोनों हाथें से उसे लुटाए। फिर भी दौलत बढ़ती जाए।

सोना प्रजापत, उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

शैलेन्द्र सिंह राजावत, शिक्षक, उदय पाठशाला गिरिराजपुरा

हीहीही ठीठीठी

एक ट्रेन जयपुर से दिल्ली की तरफ रवाना होनी थी। रात के दस बज चुके थे। सभी डिब्बे खचाखच भर गए। हमारे मित्र गुप्ता जी को ट्रेन में जगह नहीं मिली तभी उन्हें एक उपाय सूझा। उन्होंनें साँप–साँप चिल्लाना शुरू कर दिया। यात्री बेचारे सामान आदि उतार कर दूसरे डिब्बे में चले गये। गुप्ता जी आराम से सीट पर बिस्तर लगाकर सो गये। प्रातःकाल चाय की आवाज से उनकी नींद खुली तो उन्होंने चाय वाले से पूछा कौनसा स्टेशन है? चाय वाले ने कहा जयपुर है। लेकिन जयपुर से तो रात को चले थे। चाय वाले ने कहा कि कल रात इस डिब्बे में साँप निकल आया था। अतः इस डिब्बे को यहीं हटाकर ट्रेन को रवाना कर दिया गया।

विमल कुमार प्रजापत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

अंजलि,
उम्र–7 वर्ष, समूह–संगम

एक भिखारी, ''बाबा, भगवान के नाम पर कुछ दे दो।
बच्चा, ''सौ के नोट के खुल्ले हैं क्या?
भिखारी, ''हाँ है, बाबा।''
बच्चा, ''तो पहले उन्हें तो खर्च कर।''

दिल खुश मीना, समूह–तिरंगा, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

राहुल, गाँव–पाड़ली

एक जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। खरगोश, बंदर, हिरण, लोमड़ी और शेर। एक दिन शेर को बहुत ही जोर की भूख लग रही थी। भोजन की तलाश में शेर इधर–उधर घूम रहा था। अचानक उसे एक हिरण का बच्चा दिखाई दिया।....

भोला लुहार, *समूह–सितारे, उम्र–12 वर्ष द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

अनुसुया जाट, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय, मेईकलां

मालन आई सब्जी लाई
आलू के संग टमाटर लाई।

विष्णु गोपाल *द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

गोलमा मीना, उम्र–7 वर्ष, समूह–संगम

पहेलियों के ज़वाब –

1. खटिया 2. हिरन 3. इलाइची 4. गुलाबजामुन 5. मटर 6. गिलहरी 7. विद्या

दिलभर जाट, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय, मेईकलां